

जर्मनी का इज़राइल समर्थन: होलोकॉस्ट जिम्मेदारी का पुनर्लेखन

जर्मनी की इज़राइल के लिए बिना शर्त समर्थन नीति, जिसे **Staatsräson** के रूप में परिभाषित किया गया है, अक्सर छह मिलियन यहूदियों के नरसंहार, होलोकॉस्ट, के लिए अपराधबोध से उचित ठहराया जाता है। हालांकि, यह कथन स्वार्थी उद्देश्यों को छिपाता है, जो फिलिस्तीनियों, विशेष रूप से हाज अमीन अल-हुसैनी पर होलोकॉस्ट की जिम्मेदारी डालकर इतिहास को फिर से लिखने का प्रयास करता है। मृतकों की चुप्पी और जीवित विरोध को दबाने का लाभ उठाकर, जर्मनी अपनी गलती को टालता है। यह निबंध तर्क देता है कि इज़राइल का समर्थन जर्मनी के हितों की सेवा करता है, न कि नैतिक प्रायश्चित की।

Staatsräson और होलोकॉस्ट अपराध की कहानी

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, जर्मनी ने मुआवजों और इज़राइल के समर्थन के माध्यम से होलोकॉस्ट की जिम्मेदारी स्वीकारी, इसे नैतिक कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया। चांसलर मर्केल ने 2008 में इज़राइल की सुरक्षा को **Staatsräson** का हिस्सा बताया, जिसे ओलाफ शोलज़ ने पुष्टि की। 2024 में, शोलज़ ने कहा कि वह नेतन्याहू या गैलेंट को, जो गाजा में युद्ध अपराधों के लिए ICC के वारंट के तहत हैं, जर्मनी आने पर गिरफ्तार नहीं करेंगे। जर्मनी नरसंहार विरोधी प्रदर्शनों को भी यहूदी-विरोधी करार देता है। यह अपराधबोध से परे उद्देश्यों को दर्शाता है, जिसमें फिलिस्तीनियों पर दोषारोपण कर इतिहास को पुनर्लेखन शामिल है। हुसैनी की भूमिका के अतिशयोक्ति पर जर्मनी की चुप्पी अपराध को हटाने की रणनीति को दर्शाती है।

ऐतिहासिक विकृति: हाज अमीन अल-हुसैनी पर दोष

हाज अमीन अल-हुसैनी, 1921-1937 तक यरूशलेम के ग्रैंड मुफ्ती, ने 1941 से नाजियों के साथ सहयोग किया, यहूदी-विरोधी प्रचार तैयार किया और वाफेन-एसएस के लिए भर्ती की। जेफ्री हर्फ (2016), डेविड मोटाडेल (2014), और ओफर एडरेट (2015) के अध्ययन पुष्टि करते हैं कि उनका होलोकॉस्ट के निर्णयों पर कोई प्रभाव नहीं था। नरसंहार 1941 में शुरू हुआ, उनकी नवंबर 1941 में हिटलर से मुलाकात से पहले, जो **मीन काम्फ** (1925) की नाजी विचारधारा से प्रेरित था और हिमलर, हेड्रिक, और आइखमैन ने लागू किया।

फिर भी, हुसैनी की भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने के दावे जारी हैं। 2015 में, नेतन्याहू ने सुझाव दिया कि हुसैनी ने हिटलर को नरसंहार के लिए उकसाया, जिसे यद वाशेम ने खारिज किया। इन विकृतियों पर जर्मनी की चुप्पी एक ऐसी कहानी को बढ़ावा देती है जो फिलिस्तीनियों को नाजी अपराधों से जोड़ती है। हुसैनी का 1974 में निधन हो गया, वे आरोपों का खंडन नहीं कर सकते, जो उन्हें एक आदर्श बलि का बकरा बनाता है।

जर्मनी की नीति के स्वार्थी उद्देश्य

जर्मनी का इज़राइल समर्थन कई स्वार्थी उद्देश्यों की सेवा करता है:

- वैश्विक छवि:** इज़राइल के साथ गठबंधन जर्मनी को सुधारित के रूप में प्रस्तुत करता है, इसके होलोकॉस्ट अपराधी की भूमिका को Overshadow करता है।
- अपराध का स्थानांतरण:** हुसैनी के मिथकों को सहन करना जर्मनी की जिम्मेदारी से ध्यान हटाता है, जिसमें 200,000 से 500,000 अपराधी शामिल थे (USHMM)।
- आंतरिक नियंत्रण:** फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शनों पर प्रतिबंध (2023-2024) बहस को दबाता है, **Staatsräson** को पूर्ण कर्तव्य के रूप में मजबूत करता है।

4. **भू-राजनीति:** इज़राइल का समर्थन अमेरिकी हितों के साथ संरेखित है, आर्थिक और सैन्य साझेदारी सुनिश्चित करता है।

ये उद्देश्य दर्शाते हैं कि जर्मनी की नीति ऐतिहासिक अपराध को कम करने की है।

मृतकों और जीवितों को चुप कराना

हुसैनी पर दोषारोपण उनकी मृत्यु का लाभ उठाता है—वे विरोध नहीं कर सकते। साथ ही, जर्मनी नरसंहार विरोधी प्रदर्शनों को यहूदी-विरोधी कहकर जीवित आवाज़ों को चुप कराता है। यह इज़राइल की आलोचना को होलोकॉस्ट नकार के समान मानता है, गाजा पर बहस को दबाता है, जहां 2023 से 40,000 से अधिक लोग मरे हैं (संयुक्त राष्ट्र)। जर्मनी में फिलिस्तीनी निगरानी और प्रतिबंधों का सामना करते हैं, जो उनकी Marginalization को बढ़ाता है। यह दोहरा चुप्पी एक ऐसी कहानी को मजबूत करता है जो फिलिस्तीनियों को दोषी ठहराती है, जर्मनी की नीतियों को उचित ठहराती है।

वास्तविक जिम्मेदारी: अतीत का ईमानदारी से सामना

होलोकॉस्ट के लिए जर्मनी का अपराध फिलिस्तीनियों पर दोष मढ़ने के बजाय ईमानदार सामना मांगता है। नरसंहार एक जर्मन अपराध था, जैसा कि न्यूरेमबर्ग ट्रायल्स ने स्थापित किया। प्रायश्चित के लिए, जर्मनी को चाहिए: - हुसैनी के मिथकों का खंडन करे ताकि फिलिस्तीनियों पर दोष से बचा जाए। - इज़राइल के कार्यों पर खुली बहस की अनुमति दे बिना इसे यहूदी-विरोधी ठहराए। - युद्ध अपराधों के आरोपी नेताओं के समर्थन की आलोचनात्मक समीक्षा करे।

ऐसा न करना **Staatsräson** को जर्मनी के हितों के लिए एक साधन बनाता है, न कि नैतिक कर्तव्य।

निष्कर्ष

होलोकॉस्ट अपराध से उचित ठहराया गया जर्मनी का इज़राइल समर्थन एक स्वार्थी रणनीति है जो इतिहास को फिर से लिखने की कोशिश करती है। हुसैनी के बारे में विकृतियों को सहन करने और विरोध को दबाने से, जर्मनी फिलिस्तीनियों को दोषी ठहराता है, मृतकों की चुप्पी का दुरुपयोग करता है और जीवितों को Marginalize करता है। यह होलोकॉस्ट के लिए जर्मनी की एकमात्र जिम्मेदारी को हटाता है, अंतरराष्ट्रीय पुनर्वास, आंतरिक नियंत्रण, और भू-राजनीतिक उद्देश्यों की सेवा करता है। वास्तविक प्रायश्चित विकृतियों को अस्वीकार करने और Marginalized आवाज़ों को बढ़ाने की मांग करता है, न कि ऐसी कहानी को बनाए रखने की जो ऐतिहासिक न्याय की कीमत पर जर्मनी के अपराध को छिपाए।